www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 6, 14-15

Article ID: 201

गेंदा की उन्नत कृषि तकनीक

इ. अशोक कुमार पाण्डेय[1], डॉ. सी.के त्रिपाठी[2], गोविन्द मिश्रा[3]

[1](वि.व.वि. कृषि अभियंत्रण कृषि विज्ञान केन्द्र बलरामपुर)
[2]विषयवस्तु विशेषज्ञ (कृषि प्रसार)
[3]ए.एन.डी.यु.टी. कुमारगंज अयोध्या (शोध छात्र)

संपूर्ण भारत में उगाई जाने वाली पुष्प फसल मेरीगोल्ड की उत्पति मैक्सिकों में हुई थी। इसकी उपयोगिता एवं आसानी से उगाई जाने वाली पुष्प फसल के कारण यह फसल अपने प्रदेश में अत्यधिक लोक प्रिय हो गई। इसकी व्यसायिक खेती कृषिकों के लिए बहुत लाभदायक गेदें के फूलों का उपयोग अधिकतर औषधि के रूप में लिया जाता है। पत्तियों के पेस्ट को फोड़ों के उपचार तथा पत्तियों के रस से कान दर्द व फूलों के रस को खून साफ करने के लिए लिया जाता है। गेदें की खेती को टमाटर, बैगन आदि फसलों में लगने वाले रोग सूत्र कृमि की रोकथाम के लिए प्रयोग में लेते है। गेंदा की खेती में उन्नत कृषि तकनीकी अपनाकर किसान भाई अपनी आय को बढ़ा सकते है।

किस्में

गेदें की मुख्यता निम्नलिखित दो प्रकार की किस्में है।

फ्रेंच गेंदा-

इस जाति क फूल छोटे लगभग 2.5 सेमी. से 5 सेमी. के होते है पौधों की ऊचाँई 25 से 50 सेमी. होती है। यह किस्म फूल बहुत अधिक मात्रा में देता है। फूलों का रंग लाल, पीला, बैगनी, नारंगी होता है।

अफ्रिकन गेंदा-

अफ्रिकन किस्में बड़े फूलों वाली लगभग 5 से 7 सेमी. चैड़े तथा पौधों की ऊचाँई 45 से 100 सेमी. होती है। फूलों का रंग हल्का पीला व नारंगी होता है। फूलों की व्यवासायिक खेती के लिए सार्वाधिक उपयोग इसी किस्म का किया जाता है।

जलवायु

गेंदे को मुख्यता गर्म मौसम में उगाया जाता है लेकिन अत्याधिक सर्दी को छोड़कर इसे किसी भी समय या किसी भी मौसम में उगाया जा सकता है।

मिट्टी

अच्छी खाद्य वाली हल्की बलुई दोमट मृद्रा इसके लिए सर्वोत्तम रहती है। नदी की रेत पर इसकी खेती बहुत बढ़िया होती है।

बीज दर व बुआई

गेंदा बीज द्वारा आसानी से लगाया जा सकता है। बीजों को सामान्यता पौध घर में लगा कर पौध का स्थान्तरण खेत में किया जाता है। पौधे हेतु बीज की मात्रा 200 ग्राम से 300 ग्राम प्रति हेक्टेयर रखनी चाहिए। गेंदे को सीधे खेत में बोने के लिए बीज दर 1.5 से 2 किग्रा. प्रति हेक्टेयर रखते है। प्रदेश में गेंदें की बुआई मई से जून, अगस्त से अक्टूबर तथा फरवरी से मार्च तक की जानी चाहिए।

खाद एवं उर्वरक

जब पौधे लगभग 3 सप्ताह के हो जाए तब इसकी रोपाई खेत में कर दे। तथा रोपाई के तुरन्त बाद सिंचाई करे व रोपाई सायं काल लाईन में करते है। लाईन से लाईन व पौध से पौध की दूरी 45 से 60 सेमी. रखनी चाहिए।

सिंचाई व निराई-गुड़ाई

समय समय पर सिंचाई व निराई गुड़ाई करते रहना चाहिए। रवी की फसल में 10 से 15 दिन के अंतराल पर तथा गर्मी की फसल में 5 से 6 दिन के अन्तर पर सिंचाई अवश्यक होती है। 2, 3 गुड़ाई पर्याप्त है ताकि फसल पर कुछ मिट्टी चढ़ सके ताकि पौधे गिरे ना।

उपज

गेंदा लगभग दो माह बाद फूल देने लगता है। फूलों की तुड़ाई सायंकाल को करनी चाहिए फूलों की पैदावार 30000 से 40000 किग्रा. प्रति हेक्टेयर होती है।

व्याधि एवं कीट

गेंदे पर कीड़ों व बीमारियों का प्रकोप कम होता है क्योंकि यह सख्त किस्म का पौधा होता है। कभी कभी पत्तियों के सिकुड़ने की बीमारी जो वायरस के कारण होती है को दूर करने के लिए पौधो का उखाड़ कर तुरन्त जला देना चाहिए। पानी की निकासी ठीक न होने के कारण (फुँटराट) नामक बिमारी लग जाती है जिसे दूर करने के लिए 0.5 प्रतिशत साइथियान का छिड़काव करना चाहिए।